आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 8 • अंक-2215 • उदयपुर, शनिवार 16 जनवरी, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

बार्क ने आंख के कैंसर का स्वदेशी इलाज विकसित किया

मुंबई स्थित भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (बार्क) ने आंख के ट्यूमर के उपचार के लिए पहली स्वदेशी रूथेनियमियम 106 पट्टिका के रूप में एक नेत्र कैंसर चिकित्सा पद्धति विकसित की है। डॉक्टरों के लिए इस पट्टिका का इस्तेमाल बहुत सुविधाजनक है और इसे अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप माना गया है।

ऊर्जा विभाग (डीएई) के चेयरमैन सह सचिव केएन व्यास ने यह चिकित्सा विकसित करने की संभावनाओं पर विस्तृत बातचीत की थी। इसके बाद डीएई ने नई दिल्ली के एम्स के डॉ. राजेंद्र प्रसाद नेत्र विज्ञान केंद्र के साथ सहयोग समझौता किया था।

इसके बाद एम्स आंख के कैंसर के इलाज में बार्क द्वारा विकसित की गई पट्टिका का इस्तेमाल करने पर सहमत हुआ था। इस साल सितंबर में इस पट्टिका की सहायता से एक मरीज का इलाज किया गया था और नतीजे संतोषजनक मिले थे। नेत्र विज्ञान केंद्र के प्रमुख प्रोफेसर के मुताबिक अब तक बार्क की पट्टिका का इस्तेमाल आंख के कैंसर के सात मामलों के इलाज में किया गया है। उन्होंने बताया कि प्रारंभिक नतीजे बहुत ही संतोषजनक मिले हैं। उन्होंने यह भी कहा कि चिकित्सकों के लिए पट्टिका का उपयोग करना भी बहुत सुविधाजनक है।

कोरोना संक्रमण से मुक्ति के बाद भी रहें सतर्क

कोविड–19 महामारी ने देश के प्रत्येक नागरिक को किसी न किसी तरह से प्रभावित किया है और इसमें स्वास्थ्य मुख्य है। बावजूद इसके शुरूआती दौर में संक्रमण को लेकर जिस तरह की सतर्कता नजर आ रही थी, अब उसमें काफी कमी आ गई है। समय बीतने के साथ लोग अब इसे सामान्य तौर पर लेने लगे हैं। यह कहना भी अनुचित नहीं होगा कि लोग बेफिक्र जैसे हो गए हैं।

जीवन को पटरी पर लाना बेहद जरूरी है और इसके लिए हालात सामान्य होने चाहिए, लेकिन सामान्य होने का मतलब लापरवाह होना नहीं है। अब हमने सार्वजनिक समारोहों में भाग लेना शुरू कर दिया है। जबकि समारोहों में शामिल होते वक्त एहतियात बेहद जरूरी है। यह सही है कि कोरोना संक्रमण से ग्रस्त मरीजों में स्वस्थ होने की दर बेहतर है, लेकिन यह समय संक्रमण के लिहाज से अत्यंत संवेदनशील है। इस बीमारी से उबरने के बाद लोग लंबे समय तक मानसिक और शारीरिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। हमें इस बात को नहीं भूलना है कि कोविड–19 का खतरा अभी टला नहीं है। ऐसी स्थिति में अगले कुछ माह संक्रमण के लिहाज से अधिक संवेदनशील हो सकते हैं।

लक्षण दिखें तो चिकित्सक से लें परामर्शः कोविड–19 संक्रमण से उबरने के बाद भी कुछ लक्षण बने रह सकते हैं। यह लक्षण युवा, वृद्ध और बच्चे–किसी में भी–देखे जा सकते हैं। इनमें वे लोग भी हो सकते हैं, जो घर पर ही क्वारंटाइन हुए हों।

दुनियाभर में कोविड–19 संक्रमण से उबर चुके व्यक्तियों पर किए गए अध्ययन से पता चला है कि 55 फीसदी में थकान, 42 फीसदी को सांस लेने में परेशानी, 34 फीसदी में याद न रहने और करीब 30 फीसदी को नींद न आने की समस्याएं सामने आई हैं। यदि लंबे समय तक ये लक्षण बने रहते हैं तो चिकित्सक से परामर्श लेना बेहद जरूरी है। किसी भी तरह की लापरवाही खतरनाक साबित हो सकती है।

सेवा पथ पर आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

भोपाल केम्प में 230 कृत्रिम अंग बांटे
नर सेवा-नारायण सेवा' प्रशंसनीय कार्य- साध्वी प्रज्ञा जी ठाकुर

भोपाल (मध्य प्रदेश) में पंचदिवसीय कृत्रिम अंग वितरण शिविर का आयोजन नारायण सेवा संस्थान एवं भोपाल उत्सव मेला समिति के संयुक्त तत्वावधान में 18 से 22 नवम्बर 2020 मानस भवन में हुआ। संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने बताया कि शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि भोपाल सांसद साध्वी प्रज्ञा ठाकुर ने किया। शिविर में आये हुए दुर्घटना से शारीरिक रूप से असक्षम हुए दिव्यांगों से वार्तालाप करते हुए उन्होंने कहां कि जो इलाज के लिए जगह–जगह जाकर निराश हो चुके है या निर्धनता की वजह से असहाय है उनके लिए नारायण सेवा– नर सेवा करके बहुत ही प्रशंसनीय कार्य कर रही है।

शिविर की अध्यक्षता भोपाल उत्सव मेला समिति के अध्यक्ष मनमोहन जी अग्रवाल ने की। उन्होंने कहां कि हर वर्ष की भांति हमने संस्थान के साथ जुड़कर मध्यप्रदेश के दिव्यांगों के सेवार्थ शिविर किया है। यह हमारा 10 वां आयोजन है। इस शिविर में 230 दिव्यांगों को कृत्रिम हाथ–पैर लगाए गए।शिविर के संयोजक सुनील जी जैनाविन ने बताया कि हम सब के लिए यह सुखद एवं हर्ष का विषय है कि दिव्यांगों के कल्याणार्थ शिविर आयोजित करके उनेक कष्टमय जिन्दगी में कुछ राहत प्रदान कर पा रहे हैं। नारायण सेवा के सहयोग से हमने हजारों दिव्यांगों के ऑपरेशन करवाए है और सैकड़ो दिव्यांग भाई–बहिनों को सहाय–उपकरण ट्राईसाइकिल, व्हीलचैयर एवं वैशाखी दिए है। इन रोगियों को निःशुल्क भोजन एवं आवास की व्यवस्था भी मुहैया करवाई गई। शैलेन्द्र जी निगम, डॉ. योगेन्द्र जी विरेन्द्र कुमार जैन, नारायण सिंह कुशवाह, प्रहलाद जी अग्रवाल, श्रीमती शारदा राठौड़, कृष्ण गोपाल जी गठानी आदि ने शिविर में अपनी सेवाएं दी। पंचदिवसीय शिविर में ऑर्थोटिस्ट एवं प्रोस्थोटिस्ट डॉ. नेहा अग्निहोत्री की टीम ने रोगियों को प्रोस्थेटिक पहनाएं और हाथ को मूमेन्ट करने का प्रशिक्षण भी दिया। शाखा संयोजक विष्णु जीशरण सक्सेना भी उपस्थित थे।

तीन ऑपरेशन के बाद चल पड़ा प्रीत

खेती करके जीवनयापन करने वाले सूरत गुजरात निवासी अजय कुमार पटेल के घर 11 वर्ष पहले प्री मैच्योर बेबी प्रीत का जन्म हुआ। जन्म के 6 माह तक बेबी को नियोनेटल इंटेंसिव केयर यूनिट में रखा गया। गरीब सिान अजय दुःख के तले कर्जदार भी हो गया पर कर भी क्या सकता था। सामान्य हालात होने पर गुजरात के सूरत, राजकोट और अन्य शहरों के प्रसिद्ध हॉस्पीटल्स में दिखाया पर कहीं पर भी उसे ठीक होने का भरोसा नहीं मिला। घर के पड़ोस में रहने वाले राजस्थान निवासियों ने अजय को नारायण सेवा में जाने की सलाह दी। पहली बार 2019 में दिव्यांग प्रीत को लेकर परिजन उदयपुर आए डॉक्टर्स ने ऑपरेशन के लिए परामर्श दिया और एक ऑपरेशन कर दिया। बच्चे का पांव सीधा हो गया।

दूसरी बार फरवरी 2020 में संस्थान आये तब उसके दूसरे पांव का ऑपरेशन किया गया। दोनों पांवों के ऑपरेशन के बाद प्रीत वॉकर के सहारे चलने लग गया। इसे देख परिजन पुनः अक्टूबर 2020 में उसे संस्थान में लेकर आए तब तीसरा ऑपरेशन हुआ। अब प्लास्टर खुल चुका है... केलीपर्स व जूते पहनने के बाद प्रीत अपने पांव चलने लगा है। अब वह और उसे परिजन प्रसन्न हैं।

ऐसी हो गुरु में निष्ठा

प्राचीनकाल में गोदावरी नदी के किनारे वेदधर्म मुनि के आश्रम में उनके शिष्य वेद–शास्त्रादि का अध्ययन करते थे। एक दिन गुरु ने अपने शिष्यों की गुरुभक्ति की परीक्षा लेने का विचार किया।

सत्शिष्यों में गुरु के प्रति इतनी अटूट श्रद्धा होती है कि उस श्रद्धा को नापने के लिए गुरुओं को कभी–कभी योगबल का भी उपयोग करना पड़ता है। वेदधर्म मुनि ने शिष्यों से कहाः 'हे शिष्यो ! अब प्रारब्धवश मुझे कोढ़ निकलेगा, मैं अंधा हो जाऊँगा इसलिए काशी में जाकर रहूँगा। है कोई हरि का लाल, जो मेरे साथ रहकर सेवा करने के लिए तैयार हो ।

शिष्य पहले तो कहा करते थेः घ्गुरुदेव ! आपके चरणों में हमारा जीवन न्योछावर हो जाय मेरे प्रभु !घ्अब सब चुप हो गये। उनमें संदीपक नाम का शिष्य खूब गुरु सेवापरायण, गुरुभक्त था। उसने कहाः गुरुदेव ! यह दास आपकी सेवा में रहेगा। गुरुदेव– इक्कीस वर्ष तक सेवा के लिए रहना होगा। संदीपक – : इक्कीस वर्ष तो क्या मेरा पूरा जीवन ही अर्पित है। गुरुसेवा में ही इस जीवन की सार्थकता है। वेदधर्म मुनि एवं संदीपक काशी में मणिकर्णिका घाट से कुछ दूर रहने लगे।

कुछ दिन बाद गुरु के पूरे शरीर में कोढ़ निकला और अंधत्व भी आ गया। शरीर कुरूप और स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया। संदीपक के मन में लेशमात्र भी क्षोभ नहीं हुआ। वह दिन रात गुरु जी की सेवा में तत्पर रहने लगा। वह कोढ़ के घावों को धोता, साफ, करता, दवाई लगाता, गुरु को नहलाता, कपड़े धोता, आँगन बुहारता, भिक्षा माँगकर लाता और गुरुजी को भोजन कराता। गुरुजी गाली देते, डाँटते, तमाचा मार देते, डंडे से मारपीट करते और विविध प्रकार से परीक्षा लेते.

किंतु संदीपक की गुरुसेवा में तत्परता व गुरु के प्रति भक्तिभाव अधिकाधिक गहरा और प्रगाढ़ होता गया। काशी के अधिष्ठाता देव भगवान विश्वनाथ संदीपक के समक्ष प्रकट हो गये और बोलेः तेरी गुरुभक्ति एवं गुरुसेवा देखकर हम प्रसन्न हैं। जो गुरु की सेवा करता है वह मानो मेरी ही सेवा करता है। जो गुरु को संतुष्ट करता है वह मुझे ही संतुष्ट करता है। बेटा ! कुछ वरदान माँग ले।

संदीपक गुरु से आज्ञा लेने गया और बोला– शिवजी वरदान देना चाहते हैं आप आज्ञा दें तो वरदान माँग लूँ कि आपका रोग एवं अंधेपन का प्रारब्ध समाप्त हो जाय। गुरु ने डाँटा, वरदान इसलिए माँगता है कि मैं अच्छा हो जाऊँ और सेवा से तेरी जान छूटे !

अरे मूर्ख ! मेरा कर्म कभी–न–कभी तो मुझे भोगना ही पड़ेगा। संदीपक ने शिवजी को वरदान के लिए मना कर दिया। शिवजी आश्चर्यचकित हो गये कि कैसा निष्ठावान शिष्य है! शिवजी गये विष्णुलोक में और भगवान विष्णु से सारा वृत्तान्त कहा। विष्णु भी संतुष्ट हो संदीपक के पास वरदान देने प्रकटे।

संदीपक ने कहा– प्रभु ! मुझे कुछ नहीं चाहिए। भगवान ने आग्रह किया तो बोला – आप मुझे यही वरदान दें कि गुरु में मेरी अटल श्रद्धा बनी रहे। गुरुदेव की सेवा में निरंतर प्रीति रहे, गुरुचरणों में दिन प्रतिदिन भक्ति .ढ़ होती रहे। भगवान विष्णु ने संदीपक को गले लगा लिया।संदीपक ने जाकर देखा तो वेदधर्म मुनि स्वस्थ बैठे थे। न कोढ़, न कोई अँधापन ! शिवस्वरूप सदगुरु ने संदीपक को अपनी तात्त्विक .ष्टि एवं उपदेश से पूर्णत्व में प्रतिष्ठित कर दिया। वे बोले– वत्स ! धन्य है तेरी निष्ठा और सेवा।

संकट में सहयोग सेवा

सुनीता चौहान उदयपुर की निवासी है, 12 वर्ष पूर्व इनके पति इन्हे और इनकी बच्ची प्रियांशी को छोड़कर चले गए, ऐसी दुखद समय में भाइयों ने मदद की पर ईश्वर को कुछ और ही मंजूर था, दोनों भाई भी दुर्घटना में चल बसे। सुनीता असहाय होकर दर दर की ठोकरें खाने को मजबूर हो गई, छोटी मोटी नौकरी कर दो वक्त की रोटी के जुगाड़ में लग गई, ऐसे में कोराना महामारी के चलते मकान का किराया भी नहीं चुका पा रही है, और अपनी बेटी प्रियांशी जो को 9 वीं कक्षा में पढ़ती है उसकी स्कूल फीस भी जमा नहीं करवा पाने के कारण एग्जाम में भी नहीं बैठने दिया जा रहा था । ये सब भी कम था सुनीता जी की तबीयत बिगड़ने लगी डॉक्टर से सलाह ली गई तो पता चला उन्हें कैंसर है , जैसे तेसे लोगो से मांग कर 2 कीमोथेरपी तो करवाई पर आर्थिक समस्याओं के चलते वो भी बंद कर दी गई , और अब उनकी परिस्थिति इलाज के बाहर है। ऐसे में सुनीता जी नारायण सेवा संस्थान में सहायता की उम्मीद लेकर आए ताकि उनकी बेटी को शिक्षा में सहायता मिल सके , और संस्थान ने उनकी पिछले वर्ष और इस वर्ष की फीस 52000 जो बकाया थी वो जमा करवाई । ताकि प्रियांशी आगे पढ़ें और उनका ये साल बर्बाद ना हो।

धन्यवाद, नारायण सेवा

मेरा नाम शिवानी सोनी है। मैं तीन बार नेशनल खेल चूकी हूँ जूडो– कराटे में। हम एक दिन घर के पास में टर्न कर रहे थे तो वेन वाले ने टक्कर मार दी। मैं नीचे गिर गई और बेहाश हो गई। पैर में बहुत गम्भीर चोट आई जब मुझे होश आया तो मुझे डॉक्टर ने बताया कि, दो साल तक खड़ी भी नहीं हो सकती, खेल नहीं सकती तो मुझे ऐसा लगा कि जिंदगी खत्म हो गयी है। भाई पंकज बोला – मेंरे लिये उस दिन बड़ा दुःख का दिन था जिस दिन मैंने अपनी बहन को हॉस्पीटल में देखा था।

बहन को फिर से पैरों पर खड़ा करने की प्रतिज्ञा के चलते पंकज ने 2 महीने तक नारायण सेवा संस्थान से निःशुल्क मोबाइल रिपेयरिंग का कोर्स किया। उसमें सारा का सारा किट जो की मोबाइल रिपेयरिंग में काम आता है। सोल्डर, कॉपर वायर, सोल्डिंग वायर, और टेस्टर वगैरह और मीटर वगैरह जितने भी समान रिपेयरिंग में काम आते हैं वो सब पंकज को दिये। आज पंकज एक महीने में छह हजार रुपये तक कमा लेते है।

शिवानी कहती है– मेरे भैया ने मुझसे प्रामिस किया है कि वो बहुत जल्द मेरा ऑपरेशन करवा देगा। पैरों पे खड़ी हो के वापिस जूडो– कराटे खेल सकूंगी।

सम्पादकीय

साधना, पूजा तथा ईश्वर भक्ति के लिये हमारा सारा जोर कर्मकाण्ड, मंत्र या पूजा–पद्धति पर रहता है। यह विधान भी है। किन्तु यदि मन में खोट है तो ये सारे उपक्रम निरर्थक हैं। पुण्य के बजाय पाप ही होना है।

परमात्मा को पाने की प्रथम शर्त ही है कि मन की निर्मलता। प्रभु राम ने तो मानस में कहा भी है –'निर्मल मन जन सो मोही पावा। मोही कपट छल छिद्र न भावा।' इसलिये क्रियाओं का, पद्धतियों का, मंत्रों का अपना महत्व है किन्तु यदि मन में कोई अपेक्षा है या दूसरों के प्रति ईर्ष्या है तो वे सब निष्फल ही होने हैं।

मन की खोट को दूर करने के लिये ही तो व्यक्ति भक्ति–मार्ग का राही बनता है। यदि वह राही होकर भी खोट को ही अपनाये रहे तो फिर कैसे सफलता मिलेगी? मन की खोट को समाप्त करने के लिये अनेक महापुरुषों ने उपाय बताये हैं। इन सबमें से सरलतम उपाय है – सेवा। सेवा करने से अपने जीवन की महत्ता तो समझ में आती ही है किन्तु साथ–साथ मन भी निर्मल होता है। सेवा भी ईश्वरीय भक्ति ही है। सेवा द्वारा मन निर्मल होगा तो परमात्मा प्राप्ति तो होनी ही है।

कुछ काव्यमय

मन में तो भरी है खोट।
दूसरों को पहुँचा रहे चोट।
और भक्त होने का दावा है।
यह तो खुद से छलावा है।
मन की निर्मलता प्रभु से मिलायेगी।
यही मानव का दर्जा दिलायेगी।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

वायरस फैलने से कैसे रोकें

अपनों से अपनी बात

देने का आनंद

एक बार एक गुरु, अपने एक युवा शिष्य के साथ टहलने निकले। उन्होंने देखा कि रास्ते में पुराने हो चुके एक जोड़ी जूते उतरे हैं, जो सम्भवतः पास के खेत में काम कर रहे गरीब मजदूर के थे, जो अब अपना काम खत्म कर घर वापस जाने की तैयारी कर रहा था। शिष्य को मजाक सूझा, उसने शिक्षक से कहा, "गुरुजी, क्यों न हम ये जूते कहीं छिपा कर झाड़ियों के पीछे छिप जाएँ, जब वह मजदूर इन्हें यहाँ नहीं पाकर घबराएगा तो बड़ा मजा आएगा।"

गुरु गम्भीरता से बोला, "किसी गरीब के साथ इस तरह का मजाक करना ठीक नहीं है, क्यों ना हम इन जूतों में कुछ सिक्के डाल दें और छिपकर देखें कि इसका मजदूर पर क्या प्रभाव पड़ता है।"

शिष्य ने ऐसा ही किया और दोनों पास की झाड़ियों में छिप गए। मजदूर जल्द ही अपना काम खत्म कर जूतों

की जगह पर आ गया। उसके जैसे ही एक पैर जूते में डाला, उसे किसी कठोर चीज का आभास हुआ। उसने जल्दी से जूते हाथ में लिए और देखा कि अंदर कुछ सिक्के थे। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और वह सिक्के हाथ में लेकर बड़े गौर से उन्हें पलट–पलट कर देखने लगा। फिर उसने इधर–उधर देखा। दूर–दूर तक कोई नजर नहीं आया तो उसने सिक्के अपनी जेब मे डाल लिए। अब उसने दूसरा जूता उठाया, उसमें भी सिक्के पड़े थे। मजदूर भाव–विभोर हो गया। उसकी आँखों में आंसू आ गए। उसने हाथ जोड़कर ऊपर देखते हुए कहा, "हे भगवान ! समय पर प्राप्त इस सहायता के लिए उस अनजान सहायक का लाख–लाख धन्यवाद। उसकी सहायता और दयालुता के कारण आज मेरी बीमार पत्नी को दवा और भूखे बच्चों को रोटी मिल सकेगी।" मजदूर की बातें सुन शिष्य की आँखें भर आईं। गुरु, ने शिष्य से कहा, "क्या तुम्हारी मजाक वाली बात की अपेक्षा जूते में सिक्का डालने से तुम्हें कम खुशी मिली?" शिष्य बोला, "आपने आज मुझे जो पाठ पढ़ाया है, उसे मैं जीवन भर नहीं भूलूँगा। आज मैं उन शब्दों का मतलब समझ गया हूँ, जिन्हें मैं पहले कभी नहीं समझ पाया था कि लेने की अपेक्षा देना कहीं अधिक आनन्ददायी है। देने का आनन्द असीम है देना देवत्व है।"

– कैलाश 'मानव'

भक्ति में अहंकार कैसा?

एक भक्त को रात्रि स्वप्न में भगवान ने कहा कल मैं तुम्हारें घर आऊंगा। भक्त बहुत प्रसन्न हुआ। सुबह उठते ही नौकरानी से घर की अच्छी तरह सफाई करवाई। पत्नी से कहा जब सब कुछ ठीक– ठाक हो गया तो वह घर के द्वार पर बैठ भगवान के आने बाट जोहने लगा। थोड़ी ही देर में चिथड़ों में लिपटा भूखा– प्यासा एक भिखारी द्वार पर आया। भक्त ने यह कहते हुए उसे वहाँ से धकिया दिया कि हटो– हटो! मेरे भगवान आने ही वाले हैं। फिर एक बुढ़िया आई भक्त ने नौकर से कहकर उसे भी वहाँ से भगा दिया। बुढ़िया के जाते ही एक नंग–धड़ंग मैला– कुचैला बालक उसके सामने आ गया। भक्त को क्रोध आ गया, वह बुदबुदाने लगा.... सभी को आज ही यहाँ मरना था, इन्हीं लोगों की वजह से शायद प्रभु आने में विलम्ब कर रहे हैं।

बच्चें को भी धमकाते हुए उसने दरवाजे से लौटा दिया। सुबह से शाम हो गई पर भगवान नहीं आए। फिर यह सोचकर कि कहीं अटक गए होंगे। वह भोजन करके सो गया। रात्रि में पुनः स्वप्न हुआ।

भगवान ने कहा– भक्तजी! मैं कही नहीं अटकता। मेरे अटकने का मतलब है, सृष्टि का थम जाना। मैं दुःखी, दरिद्र, भूखे और आर्त्त के रूप में आपके द्वार पर आया था। आप ही न पहचान सके तो मैं क्या करूं? मैंने कब कहा था कि मैं छत्र– मुकुट धारण किए आऊंगा? मैं दरिद्र नारायण भी तो हूँ। भक्त को अपनी गलती का अहसास हुआ उसे जीवनपर्यन्त अपने द्वार पर आए भगवान के लौट का मलाल रहा।

बंधुओं! परमात्मा ने मनुष्य को ही ऐसा जिससे बुद्धि होती है और बुद्धि में यह सम्भावना होती है कि परमात्मा को पहचान सके। अहंकार, धन, वैभव व भक्ति के गर्व में बुद्धि को गौण बना बैठे तो यह गलती उसी की हुई ना ? भक्त की परीक्षा लेने की भगवान की अपनी अलग ही कसौटियां है।

स्वप्न में भगवान के अपने घर आगमन की सूचना पाने वाले भक्त कि आंखे अहंकार और वैभव में इतनी चुंधियाँ गई कि वे भूल क्योंकि भगवान के प्रति तीव्र अनुराग अथवा अनुरक्ति तथा निष्कपट एकनिष्ठ प्रेम, परोपकार ही सच्ची भक्ति है।

भावना जीवन के फल का निर्धारण करती हैं। भक्ति के फल खिलते हैं। स्वभाव के अनुसार भावना, भावनानुसार कर्म, कर्मानुसार स्वभाव और स्वभाव के आधार पर पुनः भावना निर्मित होती है।

उत्तम कर्म और भावना बुरे कर्म और बुरी भावना को नष्ट कर अतंकरण को पावन करके परमात्मा से जोड़ते हैं। सतपुरूषों की संगति सात्विक भावना के संवर्द्धन में सहायक बनती है। यही सद्भावना जीवन का कल्याण करती है।

अत : हमें प्राणिमात्र के प्रति सद्भावना रखते हुए जो दीन– दुःखी, निराश्रित, अपाहिज, रूग्ण और अनाथ है। उनकी सामर्थ्य अनुसार सहयता करनी चाहिए।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश के उदयपुर लौटने के बाद 5–7 महीने अत्यन्त संकट से गुजरे। व्यस्तताएं बढ़ रही थी इसलिये बार बार उसे अवैतनिक अवकाश लेने पड़ते, इससे हर महीने घर में जो बंधी बंधाई राशि आती थी, उसमें भी कमी होने लगी। कमला भी शिकायत करने लगी, इतने कम पैसों में कैसे घर चलाये। कल्पना भी विवाह योग्य हो गई थी। उसके लिये उचित वर की तलाश भी भारी काम था। सौभाग्य से अजमेर के अच्छे घर से सम्पर्क हो गया तो विवाह पक्का कर दिया। अब विवाह का खर्चा अलग सिर पर आ गया, नारायण सेवा से वह एक पैसा भी नहीं लेना चाहता था। 1991 में विवाह सम्पन्न हो गया। समधी सत्यनारायण गोयल तथा दामाद सुनील गोयल बहुत अच्छे स्वभाव के थे। कैलाश ने स्वयं को एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी से मुक्त होने की राहत महसूस की।

1993 में एक आदिवासी गांव में शिविर आयोजित किया था। सारे कार्य सामान्य तरीके से चल रहे थे तभी कैलाश ने सामने की पहाड़ी से एक युवक को घुटनों व हाथों के बल चल कर आते देखा। युवक की उम्र 20 साल रही होगी, वह एक पशु की तरह चल रहा था, पशु भी पांवों पर चलते हैं, मगर यह तो घुटनों पर चल रहा था जिससे इसके घुटने छिल गये थे, खून निकल रहा था और कंकर चुभ गये थे। कैलाश इस युवक की ऐसी दशा देखकर सन्न रह गया, उसके मन में एक सवाल कौंधने लगा –क्या कुछ लोगों को इस तरह भी जीना पड़ता है?

अंश–154

जामुन खाइये, रोग भगाइये

जामुन यह आकार में तो काफी छोटा है लेकिन गुणों से भरपूर होता है। यह हमारे संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है साथ ही अनेक रोगों में औषधि का भी काम करता है।

नीले रंग का फल जामुन आयरन, विटामिन, फाइबर और खनिजों से भरपूर होता है। इसलिए यह हमारे पेट, स्वास्थ्य और सौन्दर्य के लिए सम्पूर्ण टॉनिक है। इसलिए अन्य फलों के अलावा आप जामुन को भी तरजीह दें और इसके भरपूर लाभ प्राप्त करें।

- मुंह के छाले ठीक करने के लिए जामुन की नई पत्तियां (कोपल) पान की भांति चबाई जाती रही हैं।
- दाढ–दांत, मसूढ़ों में दर्द की स्थिति में जामुन के पेड़ की छाल को पानी में खूब उबालकर उस पानी से कुल्ला करने पर लाभ होता है।
- गांव में लोग आज भी जामुन का सिरका बनाकर रखते हैं। यह पेट के रोगों के लिए लाभदायक है। खाने के साथ थोड़ा सा सिरका लेने से भोजन आसानी से पचता है और पाचनतंत्र सुदृढ़ होता है।
- जामुन और आम का जूस समान मात्रा में मिलाकर पीने से मधुमेह में लाभ होता है।
- जामुन के पेड़ की छाल उबालकर पानी का लेप घुटनों पर लगाने से गठिया में लाभ होता है।
- विषैले जंतुओं के काटने पर जामुन की पत्तियों का रस पिलाना चाहिए।
- जामुन का रस, शहद, आंवले या गुलाब के फूल का रस बराबर मात्रा में मिला कर एक–दो माह तक प्रति दिन सुबह के वक्त सेवन करने से रक्त की कमी दूर होती है।
- जामुन की गुठली चिकित्सा की दृष्टि से काफी उपयोगी मानी गयी है। इसकी गुठली के अंदर की गिरी में जंबोलीन नामक ग्लूकोसाइट पाया जाता है। मधुमेह के नियंत्रण में यह काफी सहायक है। गुठली सूखाकर पीसकर रख लें। एक–एक चम्मच सुबह–दोपहर–शाम पानी के साथ सेवन करें।

कौन है दाता

एक संन्यासी आया। नगर में डेरा डाला। वह किसी से कोई भेंट नहीं लेता था। वह बहुत प्रसिद्ध हो गया। राजा ने उसकी गुणगाथा सुनी। उसने सोचा, क्या ऐसा संन्यासी हो सकता है, जो कुछ भी नहीं लेता। यह ढोंग है, माया है। राजा ने उसकी परीक्षा करनी चाही। राजा बहुमूल्य उपहार लेकर संन्यासी के पास गया। संन्यासी आंखें मूंद कर ध्यान कर रहा था। कुछ समय बाद आंखें खोलीं। सामने भेंट में सजाए हुए थाल पड़े थे। संन्यासी को प्रणाम कर राजा बोला– महाराज! मैं आपकी शरण में आया हूं। आप कृपाकर आशीर्वाद दें। मेरे राज्य का विस्तार हो। मेरा भण्डार बढ़े। मेरा परिवार बढ़े। मेरी यश और कीर्ति बढ़े। आप मेरी ये मांगे पूरी करें। मेरी भेंट आप स्वीकार करें। संन्यासी बोला– मैं तुम्हारी भेंट नहीं ले सकता, क्योंकि मैं केवल दाता की भेंट लेता हूं। भिखारी की नहीं। राजा बोला– आपने मुझे पहचाना नहीं, मैं राजा हूं, भिखारी नहीं हूं। संन्यासी ने कहा– अरे, अभी अभी तुम याचना कर रहे थे, मांग कर रहे थे। मांगने वाला दाता नहीं होता, भिखारी होता है।

अनुभव अमृतम्

जल ज्यादा गहरा नहीं था। जिस जल में फिसले वो जल तो आगे निकल गया और लकड़ी हाथ में रह गई पीछे का जल आ गया। एक – एक क्षण जा रहा है। कहते हैं जीवन नजर आ रहा है। जीवन के करोड़ों कण है एक प्रकाश समाप्त हुआ, दूसरा प्रकाश चालू हुआ ऐसे गति बनी हुई है। तो हमें प्रकाश नजर आता है जैसे पंखा तेज गति से घूमता है। हमें लगता है एक ही पंखा घूम रहा है। एक ही पंखुड़ी घूम रही है लेकिन पंखुड़ी वह एक नहीं, वह पंखुड़ी चार है। जब पंखा थमेगा तो मालूम पड़ेगा। इसलिये शब्द के भी करोड़ों कण, प्रकाश के करोड़ों कण। जो भोजन का ग्रास हाथ में लिया है इसलिये लाखों करोड़ों कण, बाल कितने अच्छे बाल। बहुत अच्छे एक बाल आ गया, और कहते हैं अरे! तुम्हें दिखता नहीं? थू थू थू सब्जी के साथ भोजन का ग्रास भी बाहर निकल गया।

जीवन के अंधकार में, वो ही देता प्रकाश।
सुख, दुःख आये जाये, सदा करो विश्वास।।

अरे! गलती हो गई। माफी चाहती हूँ। मुझे मालूम नहीं था। क्यों भाई बाल की बहुत तारीफ कर रहा था। बड़े घुंघराले बाल है, बड़े चमकीले बाल है। क्या हो गया? बस सम्पूर्ण शरीर से अलग हो गया और उस बाल की वेल्यू समाप्त हो गई? दांत बड़े मोती जैसे हैं और एक दांत अगर आ जाये तो कहते है हड्डी का टुकड़ा आ गया। दाँत के प्रकार –दूध के दाँत/अस्थायी दाँत। स्थायी दाँत/अन्न के दाँत। दूध के दाँत– यह दाँत नवजात शिशु के 6–7 माह की आयु में निकलने लगते है। ढाई वर्ष की आयु तक निकल आते है इनकी संख्या 20 होती है। अन्न के दाँत– इनकी संख्या 32 होती है। अक्कल (प्रज्ञा दन्त) दाढ़ 16 वर्ष की आयु के बाद निलकती है। कभी–कभी यह 25–30 वर्ष की आयु हो जाने पर भी नहीं निकलती है। दाँतों के कार्य– भोजन को चबाने में सहायक, जीभ को बोलने में सहायक, सुन्दरता बनाने में सहायक। अच्छा रहा अन्दर नहीं गया। थू थू, नेल, पोलिस नाखून का एक टुकड़ा आ गया। जैसे ही इस देह से अलग हो गये हमारा अस्तित्व नहीं रहेगा, और ये अस्तित्व असत्य है। जितना है। ये विनाशी है। इधर हवाई जहाज अपनी गति से बढ़ रहा है।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 39 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023